प्रसार शिक्षा निदेशालय
चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर

नवम्बर, 2022 माह के प्रथम पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के कृषि एवं पशुपालन वैज्ञानिकों ने नवम्बर, 2022 माह के प्रथम पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जिन्हें अपनाकर प्रदेश के किसान आर्थिक तौर पर लाभान्वित हो सकते हैं ।

फसल उत्पादन

गेहूँ

- निचले क्षेत्रों (900 मीटर से कम ऊंचाई) के किसान नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में एच.पी. डब्ल्यू.-368 एच.पी.डब्ल्यू.-236, वी.एल.-907, एच.एस.-507, एच.पी.डब्ल्यू.-349. एच. एस.-562 व एच.पी.डब्ल्यू-155 किस्मों की विजाई करें।
- मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों (900-1500 मीटर ऊंचाई) के किसान नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में एच.पी.डब्ल्यू.-249, एच.पी.डब्ल्यू.-236, वी.एल.-907, एच.एस.-507, एच.पी.डब्ल्यू. -349. एच.एस.-562 व एच.पी.डब्ल्यू-155 किस्मों की विजाई करें।
- बिजाई के लिए 100 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें।
- बिजाई के लिए रैक्सिल (1 ग्राम/कि.ग्रा बीज) अथवा बैविस्टिन या विटावैक्स (2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज) से उपचारित बीज का प्रयोग करें।
- गेहूँ की बिजाई जहां सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के आरम्भ में की गई हो और खरपतवारों के पौधे 2-3 पत्तों की अवस्था (बिजाई के 35-40 दिनों बाद) में हों तो यह समय गेहूँ में खरपतवार नाशक रसायनों के छिड़काव का है। आइसोप्रोटूरान (75 डब्ल्यू. पी) 70 ग्रा. या वेस्टा 16 ग्राम प्रति कनाल की दर से पर्याप्त होती है और छिड़काव के लिए 30 लीटर घोल प्रति कनाल के हिसाब से प्रयोग करें।

मसर

- मसर की विपाशा व मारकण्डे किस्मों की बीजाई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक कर लें। यह फसल बरसात के बाद भूमि में बची नमी में भी उगाई जा सकती है। बीज की मात्रा 25-30 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रखें। फसल को केरा विधि से 25-30 सैं.मी. की दूरी पर पंक्तियों में बीजें।

सब्ज़ी उत्पादन

- प्रदेश के निचले एवं मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में प्याज की सुधरी प्रजातियों जैसे पालम लोहित, पटना रैड, नासिक रैड, पूसा रैड, ए.एफ.डी.आर,. ए.एफ.एल.आर. तथा संकर किस्मों इत्यादि की पनीरी दें। पनीरी उगाने के लिए तीन मीटर लम्बी, एक मीटर चौड़ी तथा 10-15 सैं.मी. ऊंची क्यारी में 20-25 कि.ग्रा. गोबर की गली सड़ी खाद, 200 ग्रा. 12:32:16 (इफ्रको खाद), 20-25 ग्राम फफूंदनाशक इण्डोफिल एम-45 तथा 10-15 ग्रा. कीटनाशक (थीमेट या फोलीडॉल धूल) 5 सैं.मी. मिट्टी की ऊपरी सतह में मिलाने के उपरान्त 5 सैं.मी. पंक्तियों की दूरी पर बिजाई करें। बिजाई से पहले बीज का उपचार (बैविस्टीन 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज) से अवश्य करें।

- इन्हीं क्षेत्रों में लहसुन की सुधरी प्रजातियों जैसे जी.एच.सी.–1 या एग्रीफाऊँड पार्वती की बिजाई पंक्तियों में 20 सैं.मी. व पौधें में 10 सैं.मी. की दूरी पर करें। बिजाई से पहले 200–250 क्विंटल गोबर की गली सड़ी गोबर खाद के अतिरिक्त 235 कि.ग्रा. 12:32:16 मिश्रण खाद तथा 35 से 40 कि. ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हेक्टेयर खेतों में डालें।
- निचले एवं मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में मटर की सुधरी प्रजातियों जैसे पालम समृद्ध, पी.पी. –89, जी.एस.–10, आजाद पी.–1 एवं आजाद पी.–3 की बिजाई 45 सैं.मी. कतारों तथा 10 सैं.मी. पौधे से पौधे की दूरी पर करें। बिजाई से पहले 200 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 185 कि.ग्रा. मिश्रण (12:32:16) खाद तथा 50 कि. ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में डालें।
- इन्हीं क्षेत्रों में मूली, गाजर व शलगम इत्यादि में पौधें की छंटाई करें तथा 7–10 सैं. मी. पौधे से पौधे की दूरी बनाए रखें।
- फूलगोभी, बन्दगोभी, ब्रॉकली, चाइनीज सरसों इत्यादि की रोपाई 45–60 सैं. मी. पंक्ति से पंक्ति तथा 30–45 सैं.मी. पौधे से पौधे की दूरी पर करें।
- गांठगोभी, पालक, लैटयूस, मेथी, धनिया व क्यूँ (वाकला) आदि को भी लगाने/बोने का उचित समय है। रोपाई से पूर्व 100 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 185 कि.ग्रा. मिश्रण (12:32:16) खाद तथा 30–40 कि. ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में डालें।
- इसके अतिरिक्त खेतों में लगी सभी प्रकार की सब्ज़ियों में 10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें, फिर निराई–गुड़ाई करें तथा नत्रजन (40–50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर) खेतों में डालें।

चारा उत्पादन

- हरे चारे के रूप में सरसों मिश्रित जई और बरसीम की पहली कटाई की जा सकती है। संकर हाथी घास की अन्तिम कटाई कर लें, नहीं तो इस घास के ठूंठ सूख जाते हैं।
- जई की कैंट और पालमपुर–1 किस्मों की बिजाई के लिए 100 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें।
- सिंचित क्षेत्रों में राई घास की हिम पालम राई घास–1 किस्म का प्रयोग करें।

फसल संरक्षण

- जिन क्षेत्रों में (विशेष रूप से बारानी क्षेत्रों में) भूमि में पाये जाने वाले कीटों जैसे कि सफेद सुंडी, कटुआ कीट तथा दीमक आदि का अत्याधिक प्रकोप होता है, वहां गेहूँ, चना, मटर आदि की बिजाई से पहले क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. (2 लीटर) को रेत (25 कि. ग्रा.) में मिलाकर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत में मिलाएं। गोभी वर्गीय सब्ज़ियों की पौध लगाने से पहले कटुआ कीट से प्रभावित खेतों में भी उपरोक्त कीटनाशक विधि को अपनाएं।
- तोरिया व अन्य सरसों वर्गीय फसलों में तेले का प्रकोप हो सकता है तथा इससे बचाव हेतु मैलाथियान नामक कीटनाशक का (1 मि.ली./ली. पानी की दर से) छिड़काव करें।
- गेहूँ, मटर व चने की फसलों को बीमारियों से बचाने के लिए बिजाई से पहले बीज का वीटावैक्स/बैविस्टीन (2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) से उपचार कर लें। गोभी व प्याज की पनीरी में कमरतोड़ रोग की रोकथाम हेतु क्यारियों को बैविस्टीन (10ग्रा.) व डाईथेन एम–45 (25 ग्रा.) के घोल मिश्रण (10 लीटर पानी में) से सींचें।

पशुधन

- सर्दियों में पशुओं को निम्न स्तर के चारे जैसे भूसा, टांडा या पराल ज्यादा खिलाए जाते हैं। अतः प्रत्येक पशु को 40 ग्राम प्रतिदिन की दर से खनिज लवण मिश्रण अवश्य खिलाऐं।
- सर्दी से बचाव के लिए सरवा घास बिछौने के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। पशुओं को सीधी सर्द हवाओं से बचाने का प्रबन्ध करना जरूरी है। छोटे बच्चों को रात के समय पशुगृह के अन्दर रखें।
- मुर्गियों के लिए अधिक उर्जा देने वाला दाना मिश्रण आवश्यक है। अतः इसकी पूर्ति के लिए मिश्रण में 5–7 प्रतिशत अनाजों का अधिक प्रयोग करें। मुर्गियों के कमरे को सीधी सर्द हवाओं से बचायें और इनमें प्रतिदिन 15–16 घंटे रोशनी का प्रबन्ध करें। यदि हो सके तो छतों को पराल से ढक दें। यदि मुर्गीघर के अन्दर बिछाबन गीला है तो इसे तुरन्त बदल दें व सप्ताह में 3–4 बार पलटते रहें। मांस वाले चूजे पालने के लिए अच्छी हैचरी से ही चूजे प्राप्त करें।
- खरगोशों में प्रजनन न करवाऐं, क्योंकि सर्दियों में बच्चों में मृत्यु दर बढ़ जाती है।
- मछली पालन के लिए समय–समय पर गोबर की खाद तालाबों में डालते रहें।
- यदि पशुओं में किसी प्रकार की बीमारी फैल जाए तो तुरन्त स्थानीय पशु–चिकित्सक से परामर्श करें।

किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु अपने जिला के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें। अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक) में दूरभाष नंबर 01894–230395 या 1800 180 1551 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

27/10/2020

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रतिलिपि :

1. सयुंक्त निदेशक (सूचना व जनसम्पर्क), चौ.स.कु. हि.प्र. कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला (हि.प्र.)
3. प्रभारी, यू.एन.एस., चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय को बेवसाइट में अपलोड हेतू प्रेषित।
4. केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, धर्मशाला तथा शिमला, हिमाचल प्रदेश।
5. केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
6. प्रधान ग्राम पंचायत, धरेड़ को उचित कार्यवाही हेतू प्रेषित।

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/- 5614-19. Dated : 27|10|2022